मैहर घराने एवं सरोद में महिलाओं की अग्रणी भूमिका

प्राप्तिः 04.11.2024
स्वीकृतः 26.12.2024

90

अर्चना कुमारी
शोधार्थी
पी.जी. हेड पाटलीपुत्र युनिर्वीसिटी
ईमेलः archana7488340874@gmail.com

डॉ0 रीता दास
गाईड (विभागाध्यक्ष)
जे.डी. विमेंस कॉलेज
पटना

सारांश

मैहर घराने के संस्थापक बाबा अलाउद्दीन खाँ साहब पुराने पीढ़ी के उस्ताद थे लेकिन यह एक उल्लेखनीय तथ्य है पुरानी पीढ़ी के उस्ताद होते हुए संगीत की और एफ पुरानी सशक्त ध्रुवपदीय परम्परा के संगीतकार होते हुए भी अत्याधुनिक विचार के व्यक्ति थे। वे स्वयं एक संभ्रात मुस्लिम गृहस्थ परिवार के थे। लेकिन उनके सांगीतिक अनुभव अत्यंत विषद एवं विविध थे। राज दरबार से लेकर थियेटर तथा भारतीय से लेकर पाश्चात्य संगीत तक एवं बेन्ड पार्टी के उनके अनुभव वैविध्यपूर्ण थे। भारतीय मर्यादा का पालन करते हुए संगीत को उन्मुक्त रूप से पुरूष और महिलाओं के बीच शास्त्रीय कला फैलाने का उनका अटूट विश्वास था। पुरुष एवं महिला में समान रूप से संगीत शिक्षा के पक्षधर उ0 अलाउद्दीन खाँ की दो गुणी महिला विश्या हुई, पहली पुत्री अन्नपूर्णा देवी (सुखहार) एवं दूसरी सरोद–वादक श्रीमती शरणरानी।

मुख्य बिन्दू

मेहर, सरोद, सुखहार, सरोदवादिका, गणिकाएँ, सामंतयूगीन, पाश्चात्य, कार्यक्रम, सम्मान, संगीत, नाट

आश्चर्य की बात यह है कि उनके समकालीन कलाकार हिन्दु या मुस्लिम संगीतजीवी कलाकार जिनका खानदानी पेशा संगीत रहा है, अपने या अपने किसी संबंधी के परिवार में महिला को संगीत नहीं सिखाते थे और न संगीत सीखने की इजाजत देते थे। सच तो यह है कि सामंतयुगीन संकीर्ण धारणाओं से वे अत्यधिक ग्रस्त रहते थे। यह सच है कि गायिकाएं उस समय अधिकतर और मुख्यतया गणिकाएँ ही थीं; जो राजदरबार से संबद्ध थी। फलतः महिलाओं को संगीत का प्रशिक्षण देना अन्तर्विरोध एवं पूर्वाग्रहों से घिरे उन संगीतकारों के लिए कठिन समस्या थी। इस परिप्रेक्ष्य में उ0 अलाउद्दीन ने महिलाओं को संगीत का प्रशिक्षण देकर एक महान एवं क्रांतिकारी कार्य किया। उन्होंने

सर्वप्रथम अपने परिवार से इस कार्य को आरंभ किया। उ0 अलाउद्दीन ने अपने दो पुत्रियों, श्रीमती जहाँआरा को शास्त्रीय गायन एवं श्रीमती अन्नपूर्णा को सितार सुरबहार की शिक्षा प्रदान की थी। इनके अतिरिक्त वृद्धावस्था में उन्होंने अपनी पोती बेबी (उ0 अलीअकबर की सुपुत्री) को सितार वादन की विधिवत शास्त्रीय शिक्षा दी। तदुपरांत जब श्रीमती शरणरानी केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी की छात्रवृति लेकर मैहर सरोद सीखने आई तो उ० अलाउद्दीन ने उन्हें अपने परिवार में मर्यादापूर्वक रखकर पितृवत स्नेह के साथ शिक्षा प्रदान किया। इनके अतिरिक्त सुत्री शिप्रा बनर्जी को सरोद–वादन की शिक्षा दी। मैहर के कई सभ्रांत एवं कुलीन परिवारों की महिलाएं जो उ० अलाउद्दीन के गुरु भाव से अनुप्रेरित होकर संगीत सीखना चाहती, उन सभी को मुक्त भाव से वे गायन–वादन की शिक्षा देते।

आचार्य अलाउद्दीन खाँ के शिष्य प्रो० सी० एल० दास जो बिहार से थे।शायद कम लोगों को यह जानकारी हो कि सन् 1950 के दशक में बिहार में मैहर घराने के सरोद वादन को लाने में उन्होंने अहम् भूमिका निभाई भी प्रो० दास की पुत्री डॉ० रीता दास बिहार की प्रथम महिला सरोद वादिका हैं। इन्होंने सरोद की सर्वप्रथम शिक्षा अपने पिता से ली।

इसलिए जब महिला कलाकारों की चर्चा हो रही है तो उनकी क्षमताओं और उपलब्धियों के साथ – साथ तत्कालीन समाज में उनकी चुनौतियों और दुविधाओं का भी वर्णन किया है। जिस समाज मे संभ्रात परिवार की बेटियों का घर की चौखट से बाहर जाना दूभर हो और जहाँ बेटे–बेटियों के लिए अलग –अलग सामाजिक – सांस्कृतिक नियम हो; वहीं, महिला के लिए कलाकार बनना, कितने बड़े संघर्ष की गाथा हो सकती हैं। आइए इसे हम जानेः–विदुशी अन्नपूर्णा देवी श्रीमती शरणरानी बाकलीवाल, डॉ० रीता दास इसका साक्षात उदाहरण है।

विदुशी अन्नपूणी देवी

मैहर घराने की अन्नपूर्णा देवी संगीतकार एवं मैहर घराने के संस्थापक उ० अलाउद्दीन खाँ की बेटी व विश्या थी। उनकी माँ का नाम मदीना वेगम था। उनका जन्म 23 अप्रैल, 1927 को मध्ये प्रदेश के मैहर शहर में हुआ था। उनका असली नाम रोशन आरा था। वे चार भाई–बहनों में सबसे छोटी थीं। उनके भाई अली अकबर खान भी, प्रसिद्ध सरोद वादक थे। उनके पिता अलाउद्दीन खाँ महाराजा बृजनाथ सिंह के दरबारी संगीतकार थे। उन्होंने जब बेटी के जन्म के बारे में दरबार में बताया तो महाराजा ने नवजात बच्ची का नाम अन्नपूर्णा रख दिया।

पाँच साल की उम्र से ही उन्होंने संगीत की शिक्षा प्रारंभ की। तीन बहनें सरोजा, जहाँआरा और स्वयं अन्नपूर्णा (रौशन आरा खान) थी। बड़ी बहन सरोजा का अल्पायु में ही निधन हो गया, दूसरी बहन जहाँआरा की षादी हुई परन्तु उसकी सासू ने संगीत से द्ववेश वश उसके तानपुरे को जला दिया, इस घटना से दुखी होकर इनके पिता ने निश्चय किया कि वे अपनी छोटी बेटी अन्नपूर्णा को संगीत की शिक्षा नहीं देगे। एक दिन जब इनके पिता घर वापस आए तो देखा कि अन्नपूर्णा अपने भाई अली अकवर को संगीत की शिक्षा दे रही हैं, इनकी यह अदभूत कुशलता देखकर पिता का मन बदल गया। आगे चलकर अन्नपूर्णा ने शास्त्रीय संगीत, सितार, और सुखबहार (बांस का सितार) बजाना अपने पिता से सीखा।

सन् 1941 में इनका विवाह पं0 रवि शंकर से हुआ। जो स्वयं उनके पिता के शिष्य थे। इस विवाह के लिए अन्नपूर्णा देवी ने 1941 में हिन्दु धर्म स्वीकार कर लिया। इस विवाह से उनका एक बेटा शुभेन्द्र शंकर था, जिनका निधन 1992 में हो गया था। लगभग 21 वर्षो तक वैवाहिक जीवन व्यतीत करने के बाद अन्नपूर्णा का पं0 रवि शंकर के किसी बात को लेकर तलाक हो गया। इसके बाद उन्होंने कभी भी फिर से सार्वजनिक मंच पर अपने गायन – वादन का प्रस्तुतीकरण नहीं किया। फिर ये मुंबई चली गई और वहाँ पर एकांकी जीवन व्यतीत करने लगी एवं संगीत का शिक्षण कार्य प्रारम्भ कर दिया। वर्ष 1982 में इन्होंने अपने से 13 वर्ष छोटे रूशी कुमार पंडया से पुनः विवाह कर लिया जिनका वर्ष 2013 में निधन हो गया।

भारतीय शास्त्रीय संगीत की विषेशज्ञ एवं सुरबहार (बांस का सितार) की उस्ताद अन्नपूर्णा देवी भारतीय शास्त्रीय संगीत शैली में सुरबहार बाघयंत्र बजाने वाली एक मात्र महिला कलाकर हैं। मैहर घराना 20वीं सदी में भारतीय शास्त्रीय संगीत के लिए एक प्रतिष्ठित घराना के रूप में अपना स्थान बनाए हुए था। वर्ष 1950 के दशक में पं0 रविशंकर और अन्नपूर्णा देवी युगल संगीतकार के रूप में अपनी प्रस्तुति देते रहें, विशेषकर अपने भाई अली अकबर खान के संगीत विद्यालय में। लेकिन बाद में रविशंकर कार्यक्रमों के दौरान संगीत को लेकर अपने को असुरक्षित महसूस करने लगे। क्योंकि दर्शक रविशंकर की अपेक्षा अन्नपूर्णा के लिए अधिक तालियाँ और उत्साह दिखाने लगे थे। इसके परिणामस्वरूप अन्नपूर्णा ने सार्वजनिक कार्यक्रमों में अपनी प्रस्तुति न देने का निश्चय कर लिया। यद्यपि अन्नपूर्णा देवी ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को कभी भी अपने पेशे के रूप में नहीं लिया। और न कोई संगीत का एलबम ही बनाया। फिर भी अभी तक इन्हे भारतीय शास्त्रीय संगीत से प्रेम करने वाले प्रत्येक भारतीय से पर्याप्त आदर और सम्मान मिलता रहा हैं।

अन्नपूर्णा देवी मैहर घराने के सुरबहार वादन की एक बहुत ही प्रभावशाली संगीतकार के रूप में अपनी पहचान बनाने में कामयाब रहीं। परिणामतः इन्होने अपने पिता के बहुत से संगीत शिष्यों को मार्गदर्शन देना प्रारम्भ कर दिया था। इनमें प्रमुख हैः–हरिप्रसाद चौरसिया निखिल वनर्जी, अमित भट्टाचार्य, प्रद्वीप बारोट और सस्वति साहा और बहादुर खान। इन्होंने आजीवन कोई म्युजिक एलबम नहीं बनाया। कहा जाता है कि उनके कुछ संगीत कार्यक्रमों को गुप्त रूप से रिकार्ड कर लिया गया था। जो आजकल देखने को मिल जाता हैं। इन्होंने हमेशा अपने को मिडिया के प्रचार – प्रसार से दूर रखा। ये हमेशा भारतीय शास्त्रीय संगीत को अपनी संपूर्ण क्षमता के साथ आगे बढ़ाने के बारे में सोचती रही हैं।वर्ष 1977 में अन्नपूर्णा देवी को भारत सरकार ने अपने तीसरे बड़े नागरिक सम्मान पद्भूषण से सम्मानित किया।

वर्ष 1991 में इन्हें संगीत नाटक अकादमी द्वारा भारतीय संगीतकला को आगे बढ़ाने में विशेष योगदान के लिए अपने सर्वोच्च सम्मान संगीत नाटक अकादमी अवार्ड से नवाजा गया।

वर्ष 1999 में इन्हें रविन्द्रनाथ टैगोर द्वारा स्थापित विश्वभारती विश्वविद्यालय ने डॉक्टरेट की मानद उपाधि से विभूषित किया। वर्ष 2081 में भारत सरकार के द्वारा स्थापित संगीत नाटक अकादमी ने इन्हे अपना फेलो घोषित किया।

विदुशी श्रीमती शरणरानी बाकलीवाल

श्रीमती शरणरानी भारत की ऐसी संगीतज्ञ थी, जिन्होंने वर्षो की निष्ठापूर्ण साधना से कला प्रवीणता प्राप्त कीं, इन्होंने पिछले पचास से अधिक वर्षो से सरोद वादन को जिस ऊँचाई तक पहुचाया, वह प्रशांसनीय हैं। शरणरानी भारत की एक विख्यात सरोद वादिका थी। जिन्होंने भारतीय संगीत की विश्व के विभिन्न भागों में पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं। महिला संगीतकारों में अग्रजी शरणरानी सेनिया मैहर घराने की प्रतिनिधि वादिका हैं।

दस भाई बहनों में सबसे छोटी शरणरानी का जन्म 9 अप्रैल 1929 को दिल्ली के रूदिवादी हिन्दु परिवार में हुआ। इनके पिता लाला पन्नुलाल जाने माने व्यवसायी थे। तथा इनके चाचा विख्यात पद्मविभूषण डॉ0 ताराचन्द्र भारत के महान इतिहासकार थे। शिक्षित परिवार में जन्म लेने का ही परिणाम था कि शरणरानी ने उस समय जब भारत की बहुसंख्यक नारियाँ पर्दे के अंदर तक सीमित थी, घर के चाहर दीवारी से निकलकर दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नात्तकोतर की परीक्षा उतीर्ण की तथा संगीत साधना को अपने जीवन का परम लक्ष्य बनाया।

शरणरानी बाल्यकाल से ही नृत्य एवं संगीत में प्रशिक्षण लेना आरंभ कर दिया। रूढ़िवादी विचारधारा वाले परिवार और समाज के विरूद्व संघर्ष करते हुए शरणरानी ने अपनी संगीत साधना निरन्तर जारी रखी। उन्होंने स्व0 अच्छन महाराज से कत्थक और श्री नामा कुमार सिन्हा से मणिपुरी नृत्य का प्रशिक्षण प्राप्त किया। आठ वर्ष की उम्र में ही उन्होंने अपना प्रथम सार्वजनिक प्रदर्शन किया। जिसकी पर्याप्त सराहनी की गई। शैक्षणिक क्षेत्र में भी शरणरानी अग्रणी ही रहीं और उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से एम0 ए0 किया। गत कई वर्षो में उन्होंने संगीत कार्यक्रमों के लिए कई पदक एवं प्रशस्ति पत्र प्राप्त किए। उन्होंने विष्णुदिगम्बर संगीत विश्वविद्यालय से संगीत विशारद की परीक्षा पास की और सन् 1952 में अखिल भारतीय तानसेन विष्णु दिगम्बर पारितोषिक स्पर्धा में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। प्रथम अखिल भारतीय युवक समारोह में उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय को प्रतिनिधित्व किया और वाद्य संगीत के लिए प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। उन्हें हिन्दुस्तानी वाद्य संगीत के लिए छात्रवृति भी मिली। भारत तथा विदेशों में कई सरोद वादन के कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

श्रीमती शरणरानी को संगीत पारिवारिक विरासत के रूप में नहीं मिला, बल्कि उनकी अंतः प्रेरणा उन्हें इस ओर ले गई। परिवार के रूढ़िवादी विचारों के विरूद्व संघर्ष कर शरणरानी ने अपनी स्कूल और कॉलेज शिक्षा के साथ संगीत को सर्वोपरि स्थान दिया। सरोद वादन के साथ शरणरानी ने रेडियों, नाटक आदि में भी हिस्सा लिया। उन्होंने महिला ऑकेस्ट्रा की भी स्थापना की। बाद में उन्होंने कंठ–संगीत की शिक्षा प्राप्त की, किन्तु सरोद वाद्य ने उन्हें अत्याधिक प्रभाविक किया।

उस समय मैहर घराने के प्रख्यात सरोद वादक बाबा उस्ताद अलाउद्दीन खाँ बराबर दिल्ली आया करते थे। शरणरानी ने एकबार बाबा अलाउद्दीन खाँ का सरोद वादन सुना और इतनी प्रभावित हुई कि बस सरोद की बनकर रह गई। उन्हें सरोद में प्रवीणता तथा दक्षता दिलाने में उनके गुरू उ0 उलाउद्दीन खाँ तथा उ0 अली अकबर द्वारा प्रदत्त शिक्षा का बहुत बड़ा योगदान हैं। उनके पति श्री सुल्तान सिंह बकलीवाल का भी भरपूर सहयोग मिला। सन् 1960–61 में नेपाल, मंगोलिया सोवियत रूस, ऑस्ट्रेलिया, फिजी द्वीप अमेरिका, फ्रांस, बिटेन, और स्वीटजर लैण्ड में कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाली ये प्रथम भारतीय वादिका हैं। पं0 जवाहर लाल नेहरू ने शरणरानी को भारत की सांस्कृतिक राजदूत से संबोधित किया। इन्हें आकाशवाणी में 'ए' ग्रेड श्रेणी प्राप्त थी।

सन् 1968 में पदमश्री, सन् 1974 में संगीत का सर्वोत्कृष्ट पुरस्कार मिला। दिल्ली के राज्यपाल द्वारा 1968 में संगीत सरस्वती पुरस्कार उनके पास 700 से अधिक वाद्य यंत्रो का संकल्न था। इन वाद्य यंत्रों को श्रीमती शरणरानी ने नई दिल्ली नेशनल म्युजियम को सौप दिया, सन् 1980 में इसे स्थायी ग्लैरी बनाकर तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती ईदरा गाँधी ने इसे देश को समर्पित किया। इस संग्रह का नाम'शरणरानी वाकलीवाल ग्लैरी ऑफ म्युजियम इन्स्टीच्यूट रखा गया। श्रीमती शरणरानी की मान्यता थी कि भारत की इस महान संगीत – परम्परा का एक दोष यह है कि संगीत की उत्पत्ति तथा विकास पर कोई प्रमाणिक ग्रंथ उपलब्ध नहीं हैं। इस दोष को दूर करने के लिए इन्होंने The Divine Sarod नामक पुस्तक लिखी। सरोद रानी की संज्ञा से विभूषित शरणरानी का संम्पूर्ण जीवन संगीत को समर्पित रहा।

डॉ० रीता दास

डॉ० रीता दास मैहर सेनिया घराने की एक ख्याति प्राप्त सरोद वादिका हैं। सरोदवादन के क्षेत्र में दिल्ली की श्रीमती शरण रानी बाकलीवाल तथा मुम्बई की श्रीमती जरीन दारूवाला के बाद बिहार की डॉ० रीता दास का नाम ही लिया जाता है। इस प्रकार रीता दास का देश की गिनी–चुनी महिला सरोद–वादिकाओं में महत्वपूर्ण स्थान है। ये बिहार के प्रो० सीएल दास की सुपुत्री हैं। सरोदवादन की आरंभिक शिक्षा इन्होंने अपने पिता प्रो0 सी एल दास से ही प्राप्त की। तदुपरांत इन्होंने कोलकाता के सरोद वादक उस्ताद बहादुर खाँ, खैरागढ़ स्थित स्व0 पं0 विमलेन्द्र मुखर्जी एवं दिल्ली स्थित श्री सुनील मुखर्जी से सीखा। इन्होंने मेहर घराने के उस्ताद आशीष खाँ से शिक्षा प्राप्त की है। पटना विश्वविद्यालय से समाजशास्त्र विषय में इन्होंने एम.ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्णता प्राप्त की है। साथ ही देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा आयोजित विभिन्न परिसंवादों में यथा दिल्ली, वाराणसी, आगरा, कानपुर में अपने व्याख्यान के लिए जानी जाती है। इन्होंने का इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ (छतीसगढ़) से संगीत (वाधयंत्र) सरोद में एम० ए० किया। दिल्ली विश्वविद्यालय से सरोद में एम० फील० एवं पी० एच0 डी० की उपाधि प्राप्त की। मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार, नयी दिल्ली द्वारा इन्हें स्कॉलरशिप भी प्रदान किया गया है। डॉ० रीता आकाशवाणी दिल्ली की 'A' ग्रेड कलाकार हैं। बिहार के मिथिला क्षेत्र के कलाकारों और शिक्षाविदों के परिवार में जन्में डॉ0 रीता दास ने सरोद वादन के प्रति अपने जुनून और समर्पण के साथ, वह न केवल बिहार की पहली महिला सरोद पादक बनी, बल्कि अंतरराष्ट्रीय ख्याति की कलाकार बन गई, उन्होंने काठमांडू (नेपाल) और सभी प्रमुख संगीत सम्मेलनों में संगीत प्रेमियों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

इनकी विशेषताएं

- ❖ रागों, शानदार तानों और सरोद पर काला की सिंफनी शैली के संवेदनशील चित्रण में महारत हासिल है।
- ❖ कवि विद्यापति की स्चनाओं को सरोद और मिथिला, पश्चिम बंगाल और राजस्थान की लोक धुनों पर बजाने में विशेषज्ञता।

योगदान, निर्माण और प्रदर्शन

- ❖ अधिकतम हिंदुस्तानी ओर कर्नाटक संगीत वाद्ययंत्रों के साथ युगल गीत।
- ❖ फ्यूजन संगीत रचनाएँ, 'पावर ऑफ जॉय' 'पीस थ्रू म्यूजिक, और 'स्वर – विस्तार'।
- ❖ मैथिली फीचर फिल्म 'एना कट्टेक दिन' में मुख्य भूमिका।
- ❖ कर्नाटक वायलिन के साथ युगल गीत विद्या गणपति महोत्सव शिमोगा कर्नाटक।
- ❖ भारत की स्वतंत्रता स्वर्ण जयंती पर स्पंदन, स्पिक मैके।
- ❖ संगीत समारोह, प्राचीन कला केन्द्र, मनाली संगीत समारोह ग्वालियर।
- ❖ पं0 किशन महाराज स्मृति समारोह, बनारस।
- ❖ आई के संगीत विश्वविद्यालय सम्मेलन खैरागढ़ छतीसगढ़ राष्ट्रीय युवा महोत्सव, गुवाहाटी असम।
- ❖ सप्तक एवं संगीत संकल्प समारोह अहमदाबाद साउंड ऑफ सोल्स विश्व संगीत अकादमी नई दिल्ली।
- ❖ वाणीश्री, नई दिल्ली द्वारा क्लासिकल में महिलाएं।
- ❖ भार–नेपाल संगीत सम्मेलन, काठमांडू।
- ❖ डुमरॉव धराना ध्रुपद परंपरा, दिल्ली।
- ❖ सैम कोविड संगीत समारोह, दिल्ली।
- ❖ बाबा अलाउद्दीन खान म्युजिक फाउंडेशन, दिल्ली।
- ❖ नाद – विस्तार पं0 सियाराम तिवारी स्मृति समारोह।
- ❖ पं0 विदुर मलिक ध्रुपद संगीत गुरूकुल, दिल्ली।
- ❖ स्वर, लय छन्द समारोह, दिल्ली।
- ❖ एक 1CCR कलाकार, भारत सरकार।
- ❖ एक अभिनय कलाकार के रूप में लगभग 30 वर्षो का लंबा अनुभव।
- ❖ लघु फिल्मो के लिए पृष्ठभूमि संगीत इग्नू द्वारा बनाया गया।
- ❖ दिल्ली में डॉ0 कपिला वात्सायन के साथ टेलीविजन स्क्रीन साझा की।
- ❖ दूरदर्शन का एक घंटे का लाईव शो कई दिल्ली में विशेष रूप से प्रदर्शित।
- ❖ बिहार की प्रथम महिला सरोद वादक के रूप में सुबह सवेरे, सहित पटना दूरदर्शन के कार्यक्रम।
- ❖ 1992 में पटना में अखिल भारतीय बाद्य सगीत सम्मेलन में पहली प्रस्तुती जिसमें कई उस्तादों के साथ मं साझा किया।
- ❖ एक प्रशिक्षित शास्तीय गायक, ध्रुपद वादक के शिष्य पं0 रामचतुर मलिक ने सरोद वादन में मैहर की समृद्व परंपराऍ पुस्तक और कई अन्य लेख लिखें।
- ❖ आकाशवाणी पटना और दिल्ली और पटना दूरदर्शन पर साझात्कार और फीचर प्रस्तुत किया हैं।

समन्वयक

- ❖ तरंग, अंतर – विश्वविद्यालय सांस्कृतिक उत्सव, बिहार।
- ❖ सदस्य : संगीत के लिए मॉडरेशन बोर्ड, इंटरमिडिएट काउसिंल बिहार।
- ❖ सेमिनार एवं व्याख्यान राष्ट्रीय सेमिनार अयोध्या, बी.एच.यू. उज्जैन, चंडीगढ़।
- ❖ इलाहाबाद अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार बी.एच.यू. दिल्ली. इलाहाबाद।

विशेष व्याख्यान

- ❖ अयोध्या में राम के गीतों में संगीत।
- ❖ आकाशवाणी और दूरदर्शन के साथ जुड़ाव।
- ❖ आकाशवाणी, पटना और दिल्ली और पटना दूरदर्शन पर साक्षात्कार और फीचर।
- ❖ एक गुरू परीक्षक और न्यायधीश के रूप में पाटलीपुत्र विश्वविद्यालय में बिहार के छात्रों के तैयार कर रहे हैं। पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश और छतीसगढ़ की युवा प्रतिभाओं को गुरू शिष्य परंपरा के तहत प्रशिक्षण प्रदान कर रही हैं। परीक्षकः एल.एन.एम.यू. विश्वविद्यालय दरभंगा, (बिहार) प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद टीएमबी विश्वविद्यालय भागलपुर, बिहार और प्राचीन कला केन्द्र चंडीगढ़।
- ❖ जूरी सदस्य : राज्य युवा उत्सव संस्कृति विभाग, बिहार अखिल भारतीय संगीत प्रतियोगिता, बिहार संगीत नाटक अकादमी दिल्ली द्वारा प्रतिभा उत्सव, पीटयाला। स्वर साधना समिति संगीत सम्मेलन, मुम्बई बिहार महोत्सव बिहार सरकार गोवा में उस्ताद बहादुर खान मेमोरियल संगीत सम्मेलन कोलकता बौद्ध महोत्सव, वैशाली महोत्सव और केसरिया महोत्सव बिहार।
- ❖ नाद श्री पुरस्कार, नाद आभा दिल्ली।
- ❖ संगीत कला रत्न सम्मान, स्वामी हरिदास संगीत सम्मेलन वृदावन।
- ❖ संगीत रत्न पुरस्कार सोसायटी कॉर एक्शन थ्रु म्युजिक (एस.ए.एम)
- ❖ दिल्ली बिहार की प्रथम महिला सरोद वादक, अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी।
- ❖ समिति यू.एस.ए (बिहार, झारखण्ड, शाखा)
- ❖ भारत ज्योति पुरस्कार, दिल्ली।
- ❖ बूमेन अचीवर्स अवार्ड, नव अस्तित्व फाउण्डेशन।
- ❖ बिहार की प्रथम महिला सरोद वादक, संस्कार भारती पटना।
- ❖ मिथिला विभूति सम्मान 2023 चेतना समिति द्वारा संगीत में उनके विशिष्ठ योगदान के लिए।
- ❖ गार्गी अचीवर्स अवार्ड – 2024
- ❖ नाद ब्राम्हा सम्मान – 2024
- ❖ डॉ0 रीता दास पटना स्थित जे.डी. बेमेन्स कॉलेज में संगीत की विभागाध्यक्ष पात्रलीपुत्रा विश्वविद्यालय के पी.जी. हेड के पद पर कार्यरत हैं। संगीत के छात्र – छात्राओं के उच्च शिक्षा एवं मार्ग दर्शन दे रहीं हैं। महिला सशक्तिकरण का

एक साक्षात रूप डॉ0 रीता दास है, जो समाज की रूढ़िवादी बेड़ियों को तोड़कर संगीत एवं सरोद वादन में आजीवन अविवाहित रहकर दृढ़संकल्प कर अपना, अपने पिता एवं गुरूओं का नाम रौशन किया।

निष्कर्ष

अंत में आज भी हमारे सामाज में महिलाओं की स्थिति सामान्य नहीं हैं। बाकी सभी विषयों या क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति कुछ हद तक ठीक है, परन्तु संगीत में महिलाओं का अग्रसर होना